यद्यपि सैम्युलसन के आधार चक्र सिद्धान्त का काफी महत्व है फिर भी इस सिद्धान्त की बहुत सी आलोचनाए की गई है जो निम्न है।

(1) यांत्रिक क्रिया – इस सिद्धान्त के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि अर्थव्यवस्था का संचालन मशीनवत होता है त्वरक व गुणक उसके कल पुर्जे मात्र है जो निर्जीव है तथा एक निश्चित क्रम मे कार्य करते है। वास्तविकता इससे भिन्न है। अर्थव्यवस्था के सभी अंग अनिश्चित होते उनमे पर्याप्त लोच होती है तथा वे अनेक घटको से प्रभावित होते है वास्तविक अर्थव्यवस्था इतनी जटिल है कि उसके संचालन का क्रमबद्ध विवरण देना आसान नही है।

(2) तकनीकी सिद्धान्त — यह सिद्धान्त तकनीकी अवधारणाओं से इतना गर्भित है कि मानवीय, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। गुणक एवं त्वरक जो इस मॉडल में अत्यधिक महत्वपूर्ण है उन्हे इतना अधिक तकनीकी रूप दिया गया है कि उन्हें प्रभावित करने वाले गैर तकनीकी कारणों को छोड़ दिया गया है।

(3) अवास्तविक मान्यता — इस सिद्धान्त में यह मान लिया गया है कि उपभोग की सीमान्त प्रवृति और त्वरक स्थिर है, परन्तु वास्तव में वे आय के स्तर के साथ साथ परिवर्तित होते है।

(4) मौद्रिक शक्तियों की अपेक्षा — इस सिद्धान्त की व्याख्या केवल वास्तविक शक्तियों के रूप में की गई है और मौद्रिक शक्तियों का इसमें कोई महत्व नही है जो कि उचित नही है। कारण यह है कि आधुनिक मौद्रिक अर्थशास्त्रीयों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि मुद्रा का अर्थव्यवस्था के मौद्रिक आय उत्पादन और कीमत स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

(5) उपभोग और विनियोग फलन की दोषपूर्ण अवधारणा — इस सिद्धान्त में उपभोग तथा विनियोग फलन अपूर्ण है क्योंकि वास्तव में वर्तमान उपभोग न केवल पिछले समय की आयों पर निर्भर है बल्कि कई पिछली आयों तथा भविष्य की आय पर भी निर्भर करता है क्योंकि आय सम्बन्धी भविष्य की अनुकूल प्रत्याशाऍ भी वर्तमान समय में उपभोग को प्रभावित करती है। इसी के साथ साथ वर्तमान विनियोग भी बहुत सी पिछली आयों पर निर्भर करती है।

(6) अन्य आलोचनाऍ — सैम्युलसन ने जिन चक्रो की व्याख्या की है उनकी अवधि की लम्बाई के सम्बन्ध में वह मौन है। इस सिद्धान्त में जिन चक्रो की व्याख्या की गई है, प्रवृतिहीन अर्थव्यवस्था में स्थिर स्तर के गिर्द ही oscillate करते है यह वास्तविक नही है क्योंकि अर्थव्यवस्था प्रवृतिहीन नही होती बल्कि वृद्धि की प्रक्रिया में रहती है। इसी का परिणाम है कि हिक्स ने वृद्धिशील अर्थव्यवस्था में व्यापार चक्र के अपने सिद्धान्त का सविन्यास किया।

Scanned with CamScanner